International Journal of Education and Science Research Review
Volume-11, Issue-3 May-June-2024
E-ISSN 2348-6457
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal)
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Impact Factor - 7.02
Email- editor@ijesrr.org

उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

शोधार्थी
सरिता
शिक्षा विभाग
श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय
गजरौला, मुरादाबाद
शोध निर्देशिका
डा.ऋतु भारद्वाज

सारांश—

भारतीय शिक्षा आयोगों ने शिक्षा में मूल्यों की कमी की पहचान की है और इसे मूल्यों से जोडने के लिए कई सुझाव दिए हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी मूल्य—परक शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया है। विभिन्न आयोगों की सिफारिशों और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एन.सी.टी.ई. की योजनाओं को देखते हुए वर्तमान शिक्षा का स्वरूप अत्यधिक मूल्यपरक होना चाहिए। हालांकि, समाज में भ्रष्टाचार, कुरीतियाँ, शोषण आदि व्यापक रूप से देखे जा सकते हैं। इस विसंगति को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता को यह जानने की जिज्ञासा हुई कि उच्च शिक्षा में अध्यापनरत शिक्षकों में विद्यमान मूल्यों के बारे में पता लगाया जाए, ताकि उनकी वर्तमान स्थिति को समझकर प्रभावी मूल्यों के निर्माण का अध्ययन किया जा सके। शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि उच्च स्तर के महाविद्यालयों में कुल मूल्य एवं विभिन्न आयामों ज्ञानात्मक, धार्मिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों के प्राप्तांकों का महाविद्यालयों के शिक्षकों पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

कुंजी शब्द— महाविद्यालय, शिक्षक, मूल्य।

प्रस्तावना

शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंगों शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम में, शिक्षक का स्थान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया की धुरी शिक्षक होता है, और उसके निर्देशन के अभाव में विद्यार्थी समाज ज्ञानार्जन की उचित दिशा का अनुसरण नहीं कर सकता। पाठ्यक्रम को सरस और बोधगम्य बनाने में शिक्षक की भूमिका प्रमुख होती है। शिक्षक शिक्षा प्रक्रिया को देश—काल के अनुरूप सही दिशा प्रदान करते हैं। एक शिक्षक की भूमिका निर्धारित पाठ्यक्रम को समाप्त करने से लेकर भावी नागरिकों के सर्वांगीण विकास तक होती है। इस प्रकार, व्यक्ति—निर्माण से लेकर राष्ट्र—निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका अनिर्वचनीय है। इसी कारण गुरु को प्राचीन काल से ही देवत्रय से भी उच्च स्थान प्रदान किया गया है—

गुरू ब्रह्म गुरूर्विष्णु: गुरूर्देवो महेश्वर:।
गुरु: साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नम:।।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, जिसे 29 जुलाई 2020 को भारत के केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया, भारत की नई शिक्षा प्रणाली के दृष्टिकोण को रेखांकित करती है। इस नीति ने पिछली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की जगह ले ली है। यह नीति प्राथमिक शिक्षा से उच्च शिक्षा तक और ग्रामीण एवं शहरी भारत दोनों में व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए एक व्यापक रूपरेखा तैयार करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य 2021 तक

भारत की शिक्षा प्रणाली को बदलना है और यह नीति 2020 भारत को बदलने में सीधे प्रकार से योगदान प्रदान करती है। इसका उद्देश्य धर्म, लिंग, जाति या पंथ के किसी भी भेदभाव के बिना, सभी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके मौजूदा जीवंत ज्ञान समाज को बनाए रखना और उसकी देखभाल करना है। यह नीति भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाने की दिशा में भी एक कदम है। इस नीति में परिकल्पना की गई है कि हमारे संस्थानों के समान पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र छात्रों में मौलिक कर्तव्यों के प्रति सम्मान की भावना पैदा करें और संवैधानिक मूल्यों, अपने देश और एक बदलती दुनिया के साथ एक संबंध स्थापित करें। इस नीति का दृष्टिकोण शिक्षार्थियों के बीच ज्ञान, कौशल, आत्मविश्वास, बुद्धि और कर्म के साथ न केवल विचार बल्कि मूल्यों और दृष्टिकोणों में भी विकास करना है, जो मानव अधिकारों, सतत् विकास और जीवन के समर्थन और वैश्विक कल्याण के लिए एक जिम्मेदार प्रतिबद्धता को प्रोत्साहित करता है। गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का विकास करना होना चाहिए जो उत्कृष्ट, विचारशील और अच्छी रचनात्मक प्रवृत्ति के हों। यह नीति एक व्यक्ति को रुचि के एक या अधिक विशिष्ट जैसे विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी, भाषा, व्यक्तिगत, तकनीकी, व्यावसायिक विषयों सहित क्षेत्रों में गहराई से अध्ययन करने और चरित्र, नैतिक और संवैधानिक मूल्यों, बौद्धिक जिज्ञासा, वैज्ञानिक स्वभाव, रचनात्मकता, सेवा भावना और 21वीं सदी के कौशल को आवश्यक सीमा तक विकसित करने में सक्षम बनाती है। नई शिक्षा नीति वर्तमान प्रणाली में कुछ मौलिक परिवर्तन लाती है, और इसमें मुख्य आकर्षण बहु–विषयक विश्वविद्यालय और कॉलेज हैं, जिसमें प्रत्येक जिले में या उसके पास कम से कम एक संस्थान हो। यह छात्र पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्र, बेहतर छात्र अनुभव के लिए मूल्यांकन और समर्थन पर ध्यान केंद्रित करती है। नेशनल रिसर्च फाउंडेशन विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में उत्कृष्ट सहकर्मी–समीक्षा कार्य और प्रभावी ढंग से करेगी।

'मूल्य' एक व्यापक शब्द है, जो जीवन मूल्यों के संदर्भ में हित, आनंद, वरीयताएं, कर्तव्य, नैतिक दायित्व, आकांक्षाएं, अपेक्षाएं, आवश्यकताएं, नापसंद और बदलाव को सम्मिलित करता है। मूल्य कर्म की दृष्टि से चयन के मापदण्ड होते हैं, जो यह बताते हैं कि विशेष परिस्थितियों में हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए? प्रत्येक समाज के अपने सामाजिक मूल्य, परम्पराएँ और मापदण्ड होते हैं, जो सामाजिक प्राणी के रूप में हमारे परिवेश का अर्थ समझने में मदद करते हैं। इससे बच्चे समाज के नियमों को सीखते हैं। शिक्षा न केवल बालक को ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि उसके व्यवहार, विचार और व्यक्तित्व संबंधी कारकों का भी पूर्ण रूप से विकास करने में सहायक होती है।

शोध की आवश्यकता

मूल्य समाज द्वारा स्वीकृत आस्था, विश्वास, लक्ष्य, सामाजिक परम्पराओं तथा पर्यावरण से सम्बन्धित होते हैं। ये मूल्य सामाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति में पहुँचते हैं। आज की शिक्षा प्रणाली संभवतः अपना काम ठीक प्रकार से नहीं कर रही है, क्योंकि प्रायः ऐसा प्रतीत होता है कि व्यक्ति इन मूल्यों से युक्त नहीं है।

भारतीय जनमानस की स्थिति उस कस्तूरीमृग के समान है जिसकी नाभि में सुगन्धित 'कस्तूरी' के होते हुए भी वह उसी सुगन्ध को प्राप्त करने के लिये व्याकुल रहता है, एवं सुगन्ध को पाने के लिए घास सूँघता फिरता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में इन मूल्यों की चर्चा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। प्राचीन शिक्षा का सबसे बड़ा मूल्य 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् 'मुक्ति' था। इसमें मुक्ति का अर्थ सभी प्रकार के दु:खों से छुटकारा अर्थात मोक्ष की प्राप्ति था।

अनेक शिक्षा आयोगों ने शिक्षा में मूल्यों की कमी बताकर उसे मूल्यों से पर्याप्त रूप से जोडने की बात कही तथा इस विषय में अपने अनेक सुझाव प्रस्तुत किए। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी मूल्य परक शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया। विभिन्न आयोगों की सिफारिशों एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एन.सी.टी.ई. की योजनाओं को देखते हुए लगता है कि वर्तमान शिक्षा का स्वरूप अत्यधिक मूल्यपरक होना चाहिए, परन्तु समाज में भ्रष्टाचार, कुरीतियाँ, शोषण आदि प्रतिदिन व्यापक रूप में दृष्टिगत होती हैं।

इसी विसंगति को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता को जिज्ञासा हुई कि प्रस्तुत शोधकार्य द्वारा अध्यापकों में विद्यमान मूल्यों के बारे में पता लगाया जाए, जिससे कि उनकी वर्तमान स्थिति को समझकर प्रभावी मूल्यों के निर्माण का अध्ययन किया जा सके। इस कारणवश, इस शोध समस्या का चयन किया गया।

समस्या कथन

उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

शोध समस्या में प्रयुक्त चरों की व्याख्या/अर्थ

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त शब्दों का स्पष्टीकरण/व्याख्या/अर्थ निम्नवत् किया जा सकता है—

उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षक—

उच्च शिक्षा से सम्बन्धित शिक्षकों से आशय उच्च स्तर पर अध्यापनरत महाविद्यालयों के महिला एवं पुरूष शिक्षकों से है।

मूल्य

सामान्य अर्थों में मूल्य वह हैं जिससे किसी भी व्यक्ति द्वारा किसी भी समय पसंद किया जाए, सम्मानित किया जाए, जिसकी इच्छा की जाए और जिस का अनुमोदन किया जाए। यह इच्छित वस्तु या क्रिया की वास्तविक आनंद अनुभूति है। 'मूल्य' एक अमूर्त पूर्ण गुण है जो किसी वस्तु में निहित होता है तथा उसके महत्त्व की ओर इंगित करता है। प्रत्येक समाज के कुछ आदर्श है जिन पर सामाजिक प्रगति तथा परिवर्तन की दिशा निर्भर करती है। मूल्य निर्धारण में सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर का भी महत्त्वपूर्ण योग होता है। इस प्रकार 'सामाजिक परिस्थितियों तथा विषयों के मूल्यांकन की प्रक्रिया को मूल्य कहते हैं।' जाति, समाज, राष्ट्र के मूल्यों में विभिन्नताएं होते हुए भी, मानवीय मूल्य समान होते हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन।
    1.1 उच्च शिक्षा में सेवारत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्यों का अध्ययन।

1.2 उच्च शिक्षा में सेवारत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों का अध्ययन।

1.3 उच्च शिक्षा में सेवारत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों का अध्ययन।

1.4 उच्च शिक्षा में सेवारत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन।

1.5 उच्च शिक्षा में सेवारत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों का अध्ययन।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.1 उच्च शिक्षा में सेवारत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्यों में अन्तर नहीं है।

1.2 उच्च शिक्षा में सेवारत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों में अन्तर नहीं है।

1.3 उच्च शिक्षा में सेवारत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों में अन्तर नहीं है।

1.4 उच्च शिक्षा में सेवारत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों में अन्तर नहीं है।

1.5 उच्च शिक्षा में सेवारत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों में अन्तर नहीं है।

शोध का सीमांकन

- प्रस्तुत शोध अध्ययन में ऊधमसिंह नगर के शिक्षकों के न्यादर्श तक सीमित किया गया है।
- न्यादर्श के लिए 100 शिक्षकों का चयन किया गया है। जिनमें से 50 पुरूष एवं 50 महिला संयुक्त शिक्षकों को चयनित किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

प्रत्येक शोध में सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन एक महत्त्वपूर्ण एवं तर्कयुक्त कार्य है। इससे समस्या की गहनता के साथ—साथ समस्या की स्पष्टता तथा शिक्षा जगत में उसके महत्त्व की जानकारी प्राप्त होती है। किसी भी शोध अध्ययन द्वारा उच्च स्तर के शिक्षकों के शिक्षण मूल्य को लेकर पृथक रूप से किसी प्रकार का शोध नहीं किया गया है। उच्च स्तर की शिक्षा एक अनिवार्य शिक्षा होने के कारण तथा बालकों के अधिगम स्वरूप एवं स्तर को देखते हुए पृथक से शिक्षक मूल्य का सम्प्रत्यय सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक रूप से प्रतिपादित करना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध द्वारा प्राथमिक स्तर पर संचालित विभिन्न उच्च स्तर के महाविद्यालय के शिक्षकों के शिक्षक मूल्य का शोध सम्प्रत्यय विकसित कर अध्ययन करने का प्रयास किया है।

शोध विधि एवं प्रक्रिया

शोध विधि शोध प्रक्रिया का महत्वपूर्ण बिन्दु है। इसका निर्धारण शोध की प्रकृति पर निर्भर करता है। भिन्न—भिन्न प्रकार के शोधों के लिए अलग—अलग शोध की विधि अपनायी जाती है। शोधार्थी द्वारा चयनित समस्या वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत आती है जिसमें शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु वर्णनात्मक शोध विधि का चयन किया गया है।

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या

शोधार्थी द्वारा अपने अध्ययन की समस्या के अनुरूप ऊधमसिंह नगर के स्नातक स्तर के उच्च शिक्षा से सम्बन्धित शिक्षण संस्थाओं का चयन किया गया है क्योंकि ऊधमसिंह नगर उत्तराखण्ड की शैक्षिक परिस्थितियों का प्रतिनिधित्व करता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन के न्यादर्श के रूप में उच्च शिक्षण संस्थाओं में अध्यापनरत कुल 100 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि से किया गया। जिसमें 50 शिक्षक एवं 50 शिक्षिकायें सम्मिलित हैं।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त किए जाने वाले उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है—

- डॉ. (श्रीमती) जी.पी. शैरी द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली का का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आंकड़ों के विश्लेषण में प्रयुक्त सांख्यिकी तकनीक

प्रस्तुत अध्ययन में, उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के लिंग के सम्बन्ध में मूल्यों का पता लगाने के लिए वर्णनात्मक और अनुमानात्मक सांख्यिकी यानी मध्यमान, मानक विचलन एवं टी—परीक्षण जैसे सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

एकत्र किए गए आंकड़ों का वर्णनात्मक और अनुमानात्मक सांख्यिकीय तकनीकों के साथ विश्लेषण और व्याख्या की गई।

परिकल्पना 1— उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका— 1

उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के मूल्यों की तुलना

चर	न्यादर्श	कुल संख्या	मध्यमान	एस.डी.	टी—वैल्यू	सार्थकता स्तर
मूल्य	शिक्षक	50	24.54	2.09	3.487	सार्थक
	शिक्षिकायें	50	23.74	2.21		

तालिका संख्या 1 के अन्तर्गत उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के मूल्यों की तुलना की गयी है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 24.54 जो शिक्षकों का है तथा निम्न मध्यमान 23.74 जोकि शिक्षिकाओं का है। प्रस्तुत तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 98 पर 'टी' परीक्षण का मूल्य 3.487 है जबकि 0.05 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 1.96 है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में अधिक है। अतः इस परीक्षण परिणाम में उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के मूल्यों की तुलना करने पर सार्थक अन्तर पाया गया। अतः प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर शून्य परिकल्पना (H_01) 'उच्च सेवा में सेवारत शिक्षकों के मूल्यों में अन्तर नहीं है।' अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 1.1— उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्यों में अन्तर नहीं है।

तालिका— 2

उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्यों की तुलना

चर	न्यादर्श	कुल संख्या	मध्यमान	एस.डी.	टी—मूल्य	सार्थकता स्तर
ज्ञानात्मक मूल्य	शिक्षक	50	23.64	1.16	4.113	सार्थक
	शिक्षिकायें	50	22.35	1.89		

तालिका संख्या 2 के अन्तर्गत उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्यों की तुलना की गयी है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 23.64 जो शिक्षकों का है तथा निम्न मध्यमान 22.35 जोकि शिक्षिकाओं का है। प्रस्तुत तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 98 पर 'टी' परीक्षण का मूल्य 3.487 है जबकि 0.05 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 1.96 है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में अधिक है। अतः इस परीक्षण परिणाम में उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्यों की तुलना करने पर सार्थक अन्तर पाया गया। अतः प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर शून्य परिकल्पना ($H_01.1$) 'उच्च सेवा में सेवारत शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्यों में अन्तर नहीं है।' अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 1.2— उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों में अन्तर नहीं है।

तालिका— 3

उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों की तुलना

चर	न्यादर्श	कुल संख्या	मध्यमान	एस.डी.	टी—वैल्यू	सार्थकता स्तर
धार्मिक मूल्य	शिक्षक	50	32.38	2.86	3.068	सार्थक
	शिक्षिकायें	50	33.93	2.14		

तालिका संख्या 3 के अन्तर्गत उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों की तुलना की गयी है। उपरोक्त तालिका में निम्न मध्यमान 32.38 जो शिक्षकों का है तथा उच्च मध्यमान 33.93 जोकि शिक्षिकाओं का है। प्रस्तुत तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 98 पर 'टी' परीक्षण का मूल्य 3.068 है जबकि 0.05 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 1.96 है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका

के मान से तुलनात्मक रूप में अधिक है। अत: इस परीक्षण परिणाम में उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों की तुलना करने पर सार्थक अन्तर पाया गया। अत: प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर शून्य परिकल्पना ($H_0$1.2) 'उच्च सेवा में सेवारत शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों में अन्तर नहीं है।' अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 1.3– उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों में अन्तर नहीं है।

तालिका– 4

उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों की तुलना

चर	न्यादर्श	कुल संख्या	मध्यमान	एस.डी.	टी–वैल्यू	सार्थकता स्तर
सौन्दर्यात्मक मूल्य	शिक्षक	50	22.31	1.53	5.017	सार्थक
	शिक्षिकायें	50	23.97	1.77		

तालिका संख्या 4 के अर्न्तगत उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों की तुलना की गयी है। उपरोक्त तालिका में निम्न मध्यमान 22.31 जो शिक्षकों का है तथा उच्च मध्यमान 23.97 जोकि शिक्षिकाओं का है। प्रस्तुत तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 98 पर 'टी' परीक्षण का मूल्य 5.017 है जबकि 0.05 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 1.96 है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में अधिक है। अत: इस परीक्षण परिणाम में उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों की तुलना करने पर सार्थक अन्तर पाया गया। अत: प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर शून्य परिकल्पना ($H_0$1.3) 'उच्च सेवा में सेवारत शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों में अन्तर नहीं है।' अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 1.4– उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों में अन्तर नहीं है।

तालिका– 5

उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों की तुलना

चर	न्यादर्श	कुल संख्या	मध्यमान	एस.डी.	टी–वैल्यू	सार्थकता स्तर
सामाजिक मूल्य	शिक्षक	50	22.36	2.07	4.596	सार्थक
	शिक्षिकायें	50	20.31	2.38		

तालिका संख्या 5 के अर्न्तगत उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों की तुलना की गयी है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 22.36 जो शिक्षकों का है तथा निम्न मध्यमान 20.31 जोकि शिक्षिकाओं का है। प्रस्तुत तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 98 पर 'टी' परीक्षण का मूल्य 4.596 है जबकि 0.05 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 1.96 है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में अधिक है। अत: इस परीक्षण परिणाम में उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों की तुलना करने पर सार्थक अन्तर पाया गया। अत: प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर शून्य परिकल्पना ($H_0$1.4) 'उच्च सेवा में सेवारत शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।' अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 1.5– उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों में अन्तर नहीं है।

तालिका—6

उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों की तुलना

चर	न्यादर्श	कुल संख्या	मध्यमान	एस.डी.	टी—वैल्यू	सार्थकता स्तर
पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य	शिक्षक	50	22.02	2.87	2.362	सार्थक
	शिक्षिकायें	50	23.17	2.89		

तालिका संख्या 5 के अन्तर्गत उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों की तुलना की गयी है। उपरोक्त तालिका में निम्न मध्यमान 22.02 जो शिक्षकों का है तथा उच्च मध्यमान 23.17 जोकि शिक्षिकाओं का है। प्रस्तुत तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 98 पर 'टी' परीक्षण का मूल्य 2.362 है जबकि 0.05 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 1.96 है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में अधिक है। अत: इस परीक्षण परिणाम में उच्च शिक्षा में सेवारत शिक्षकों के पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों की तुलना करने पर सार्थक अन्तर पाया गया। अत: प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर शून्य परिकल्पना (($H_0$1.5) 'उच्च सेवा में सेवारत शिक्षकों के पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों में अन्तर नहीं है।' अस्वीकृत की जाती है।

शैक्षिक निहितार्थ

शैक्षिक निहितार्थ मूल्यों की शिक्षा वर्तमान समय की मांग है साथ ही देश के भविष्य को पाश्चात्य प्रभाव से सुरक्षित रखने का माध्यम है। विद्यालय की प्रत्येक गतिविधि अध्यापकों से छात्र/छात्राओं में किसी ना किसी मूल्य के निर्माण में योगदान देती है, मूल्यों की शिक्षा के छात्रों के वांछित व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सकता है और शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त किया जा सकता है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, वी.पी. (2002) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के चार वर्षीय एकीकृत बीएससी, बी.एड. विधार्थियों की व्यवसायिक शिक्षण अभिवृति, शिक्षण व्यवसायिक अभियोग्यता, व्यक्तित्व गुण, व्यवसायिक दक्षता एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का तुलनात्मक अध्ययन, जनरल ऑफ ऐजुकेशनल रिसर्च, वॉल्यूम—9 (1) 13—18
- www.irjhis.com (2023) IRJHIS , Volume 4 Issue 2 February 2023, ISSN 2582-8568
- JETIR January 2018, Volume 5, Issue 1
- ढुल, आई. एडं खत्री, एन. (2002) 'इफेक्ट आफ वैल्यू क्लैरिफिकेशन ऑन मॉरल रीजनिंग ऑफ चिल्ड्रेन इन रिलेशन टू पैरेन्टल एटीटयूड.' जरनल ऑफ वैल्यू एजूकेशन वॉल्यूम—2, इश्यू—2
- गोरे, एम. (1968) अरबनाइजेशन एण्ड फैमली चेंज, पापंलर प्रकाशन, बाम्बे।
- बजवा,एम. (2003) एक दक्षता आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम की रणनीतिक योजना. अध्यापक शिक्षा, वॉल्यूम— 16 (4)